Vol. 10, Issue-2 (July 2021) pp. 16-17 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

सिंधी सारंगी: एक परिचय

राजेश कुमार परसरामानी
सिंधी सारंगी वादक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़
Email: raj_chemistry@rediffmail.com

सिंधी सारंगी का उद्गम सिंध प्रान्त, जो इस वक़्त पाकिस्तान में स्थित है, में हुआ था. सिंधी सारंगी, सिंधी साहित्य वा सिंधी लोक गीत का एक अहम् हिस्सा है. प्रस्तुत शोध पत्र में सिंधी सारंगी का परिचय, सिंधी सारंगी का इतिहास एवं सिंधी सारंगी के प्रसार पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है. सिंधी सारंगी पर अब तक जो भी जानकारियाँ उपलब्ध है वह अधिकतर मौखिक है. इस शोध पत्र का उद्देश्य मौखिक साक्ष्यों को लिखित साक्ष्य में बदलना है.

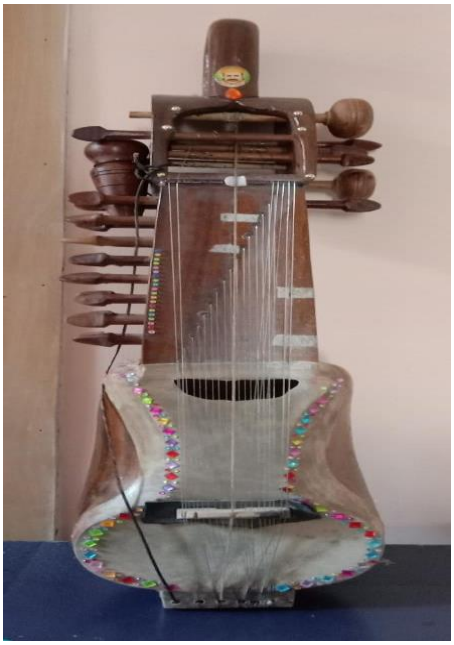

सिंधी सारंगी

परिचय - सिंधी सारंगी का उद्गम सिंध प्रान्त, वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित, से हुआ. सिंधी सारंगी का इतिहास मौखिक साक्ष्यों के आधार पर 1500 से 2000 वर्ष बताई जाती है. सिंधी सारंगी के इस वक़्त दो ही घराने उपलब्ध है. सिंधु घराना जिसे सिंधी घराना भी कहा जाता है और दूसरा मुल्तान घराना.

शुरुआत में सिंधी सारंगी का केवल एक ही घराना हुआ करता था सिंधी घराना. कालांतर में जब सिंधी सारंगी के फनकार मुल्तान शहर पहुंचे तो मुल्तान में इसका व्यापक प्रचार प्रसार हुआ . कालांतर में मुल्तान से सिंधी सारंगी के एक नए घराने की शुरुआत हुई, जिसे मुल्तान घराने के नाम से जाना गया .वर्तमान में पदमश्री उस्ताद लक्खा खां जी मुल्तान घराने से है.

सिंधी सारंगी, सिंधी इतिहास एवं सिंधी लोक गीतों का एक अहम् साज है. बनावट की दृष्टि से सिंधी सारंगी एक मिश्रित सारंगी है. बनावट की दृष्टि से सिंधी सारंगी को दो भागों में बांटा जा सकता है - एक वह सारंगी जिनमे तांत का उपयोग होता है, दूसरी वह सारंगी जिनमें तारों का उपयोग होता है. कलावती सारंगी और थाट सारंगी में तांत का इस्तेमाल होता है. ऐसी सारंगियाँ जिनमे तार का इस्तेमाल होता है (लोहे के तार का). उदाहरण -कश्मीरी सारंगी, नेपाली सारंगी. परन्तु सिंधी सारंगी, सारंगी के सम्पूर्ण वर्गीकरण में एक मात्र ऐसी सारंगी है जिसमे तांत एवं तार दोनों का इस्तेमाल हुआ है. सिंधी सारंगी की प्रथम तार लोहे के तार की होती है शेष दो तारें तांत की तार की होती है.

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

कालांतर में सिंधी सारंगी की रूप रेखा में काफी परिवर्तन हुए हैं. शुरूआती दौर पर सिंधी सारंगी सिंध, पाकिस्तान में बनाई जाती थी, जिसका इस वक़्त हमारे पास साक्ष्य उपलब्ध हैं.

500 वर्ष पूर्व उस्ताद नत्थू खां और राहमियर खां की बनाई सिंधी सारंगी पूरे देश में और बाहर के मुल्कों में भी भेजी जाती थी. वर्तमान में सिंधी सारंगी के बनाने वाले जैसलमेर एवं जोधपुर जिले में हैं, जहाँ सिंधी सारंगी के दो रूप अब भी देखने को मिलते हैं. सिंधी सारंगी की रूपरेखा में बदलाव फनकार अपनी सहूलियत के मुताबिक समय-समय पर करते रहे है.

सिंधी सारंगी के मुल्तान घराना और सिंधु घराना की बजाने की शैलियों में फर्क है. मुल्तान घराने में सिंधी सारंगी की बजाने की शैली मुरकी एवं खटका प्रधान है. अपितु सिंधी घराना, सिंधी घराने में सिंधी सारंगी बजाने में मींड और गमक की प्रधानता है.

सिंधु घराने की विशेषता- सिंधी सारंगी की बनावट पर सिंधु घराने की सिंधी सारंगियों में दोनों तरफ जारा होता है जबकि मुल्तान घराने की सिंधी सारंगी में केवल बायीं ओर जारा होता है. जारा सिंधी सारंगी के ऊपर से जो तार जाती है, उनको कहा जाता है. जीलो की संख्या अलग - अलग सारंगियों में अलग - अलग है. अमूमन इनकी संख्या 12 से 16 बताई गयी है. सिंधी सारंगी सिंधु घराने में जोड़ा नहीं होता अपितु मुल्तान घराने की सिंधी सारंगियों में जोड़ा होता है.

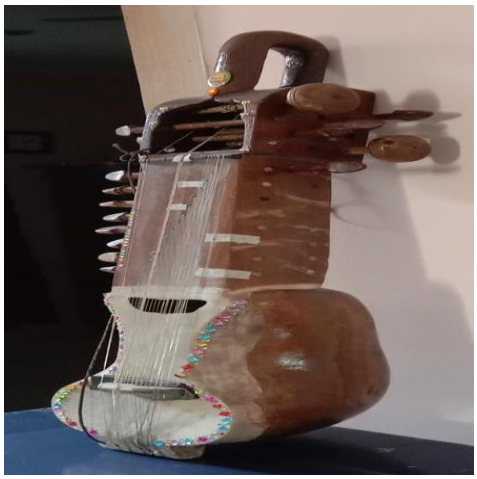

उँगलियों के रखने के तरीके में सिंधु घराने की सिंधी सारंगी तीन ऊँगली प्रधान है अर्थात सिंधु घराने की सिंधी सारंगी केवल तीन उँगलियों से बजाई जाती है, जबकि मुल्तान घराने में सिंधी सारंगी चार उँगलियों से बजाई जाती है. बजाने की शैली में मुल्तान घराने की सिंधी सारंगियाँ लोक गीतों में अधिकतर सुनने को मिलती है, जबकि सिंधु घराने की सिंधी सारंगी शास्त्रीय रूप लिए हुए है. सिंधी सारंगी की वादन शैली गायकी प्रधान है.

कृतज्ञता ज्ञापन - प्रस्तुत लेख को तैयार करने में श्रीमती विनीता भावनानी, बिलासपुर का मैं हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ. जिनकी सहायता से ही इस लेख को आप तक पहुंचा पाना संभव हो पाया है.